

ब्यूज टुडे

केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव के कारण भारत के अर्ध-संघीय ढांचे के समक्ष चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं

GST परिषद और नीति आयोग जैसी संस्थाएं वार्ता के लिए मंच प्रदान करती हैं। ये संस्थाएं भारत की लोकतांत्रिक सफलता के मूल सिद्धांत “स्वशासन और साझा शासन” को मजबूत करते हैं। भारत का संवैधानिक ढांचा: शक्ति संतुलन

संघीय विशेषताएं:

- लिखित संविधान: भारत का संविधान एक लिखित दस्तावेज है, जिसमें संशोधन की स्पष्ट प्रक्रिया दी गई है।
- द्वि-स्तरीय शासन व्यवस्था: शासन प्रणाली दो स्तरों पर संचालित होती है- केंद्र और राज्य स्तर।
- द्विसदनीय व्यवस्था: राज्य सभा राज्यों के हितों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती है। यह लोक सभा में संभावित बहुमतवाद (majoritarianism) को नियंत्रित करने का भी काम करती है। इसका अर्थ है कि जब लोक सभा में किसी दल का व्यापक बहुमत होता है, तब भी लोक सभा में बहुमत द्वारा पारित कानून की राज्य सभा में भी जांच-परख की जाती है।
- शक्तियों का विभाजन: संविधान की अनुसूची VII के अंतर्गत तीन सूचियों के माध्यम से केंद्र और राज्यों के बीच विधायी शक्तियों का विभाजन किया गया है।

एकात्मक विशेषताएं

- सशक्त केंद्र: शक्तियों का विभाजन केंद्र सरकार के पक्ष में अधिक है। उदाहरण के लिए- समवर्ती सूची में शामिल विषयों पर संसद द्वारा बनाए गए कानूनों को प्राथमिकता दी जाती है।
- एकल संविधान और नागरिकता: पूरे देश में सभी नागरिकों पर एक समान कानून और अधिकार लागू होते हैं।
- राज्यों पर संसद का प्राधिकार: अनुच्छेद 3 संसद को राज्यों की सहमति के बिना राज्यों के नाम, क्षेत्र और सीमाओं को बदलने का अधिकार देता है।
- अन्य: इसमें एकीकृत न्यायपालिका, अखिल भारतीय सेवाएं, आपातकालीन शक्तियां, अंतर्राष्ट्रीय संधियों से संबंधित बाध्यताओं को पूरा करने हेतु संसद द्वारा कानून बनाने का अधिकार, आदि शामिल हैं।

संघीय ढांचे के समक्ष मौजूदा दौर की चुनौतियां

- राजकोषीय केंद्रीकरण: उदाहरण के लिए- GST के लागू होने से राज्यों की वित्तीय स्वायत्तता प्रभावित हुई है।
- प्रशासनिक और राजनीतिक केंद्रीकरण: उदाहरण के लिए- कोविड-19 वैश्विक महामारी के दौरान आपदा प्रबंधन अधिनियम का उपयोग करके ‘राज्यों से न्यूनतम परामर्श’ के साथ राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन लगाया गया।
- अन्य: इसमें राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए विधेयक को रोक कर रखना, केंद्रीय वित्त आयोग की सिफारिश पर कर एवं राजस्व का हस्तांतरण करना, आदि शामिल हैं।

निष्कर्ष

नीति आयोग जैसे संस्थान, “टीम इंडिया” की भावना को दर्शाते हुए केंद्र और राज्यों को राष्ट्र निर्माण के समान भागीदार के रूप में जोड़ते हैं। ऐसे संस्थान एक ऐसा सार्थक संतुलन विकसित कर सकते हैं, जो एकता और क्षेत्रीय स्वायत्तता, दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करे तथा उभरती विकासात्मक चुनौतियों का समाधान खोजने में सहायक बने।

‘इंडिया मेरिटाइम वीक 2025’ ने 12 लाख करोड़ रुपये का निवेश सुनिश्चित किया

प्रधान मंत्री ने समुद्री अमृत काल विज्ञान 2047 के अंतर्गत ग्लोबल मरीन लीडर बनने की दिशा में भारत के समुद्री क्षेत्र को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित पहलों का भी अनावरण किया:

- स्वदेशी जहाज निर्माण क्षमता: तेल और गैस संबंधी सार्वजनिक उपक्रमों ने 59 जहाज निर्माण हेतु 47,800 करोड़ रुपये के ऑर्डर जारी किए हैं।
- शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SCI) ने 1 लाख करोड़ रुपये के निवेश के साथ 2047 तक अपने बेड़े को 216 जहाजों तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा है।

भारत के समुद्री क्षेत्र की उपलब्धियां

- भारत की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण: माला के हिसाब से भारत का लगभग 95% व्यापार और मूल्य के हिसाब से लगभग 70% व्यापार समुद्री मार्गों से होता है।
- पत्तन की क्षमता बढ़कर दोगुनी हुई: यह 2014 में लगभग 1,400 मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष (MMTPA) थी, जो 2024-2025 में बढ़कर 2,762 MMTPA हो गई।
- जहाज के औसत टर्नअराउंड समय में कमी: 2014 में यह औसतन 93 घंटे था, जो 2025 में घटकर केवल 48 घंटे रह गया। इससे वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार हुआ है।
- भारत में जहाज संचालन संबंधी कार्यबल (सीफेरर वर्कफोर्स): यह 2014 में 1.25 लाख से बढ़कर 2025 में 3 लाख से अधिक हो गया। यह वैश्विक सीफेरर वर्कफोर्स का 12% है। इससे भारत प्रशिक्षित सीफेरर वर्कफोर्स के विश्व के शीर्ष तीन आपूर्तिकर्ताओं में से एक बन गया है।
- कानून द्वारा प्रोत्साहन: मर्चेंट शिपिंग एक्ट, 2025, तटीय पोत-परिवहन अधिनियम, 2025, भारतीय पत्तन अधिनियम, 2025 जैसे विभिन्न कानूनों के माध्यम से समुद्री क्षेत्र को बढ़ावा मिला है।

भारत के समुद्री क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए प्रमुख कदम

- मैरीटाइम इंडिया विज्ञान 2030: भारत को एक वैश्विक समुद्री महाशक्ति बनाने के लिए इसके तहत 10 प्रमुख विषयों की पहचान की गई, जैसे- पत्तन संबंधी अवसंरचना, लॉजिस्टिक्स संबंधी दक्षता आदि।
- समुद्री अमृत काल विज्ञान 2047: इसके तहत जहाज निर्माण, कूज पर्यटन, कौशल विकास आदि के लिए 70 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश का लक्ष्य रखा गया है।
- सागरमाला: इसके तहत लॉजिस्टिक्स की लागत में कटौती, रोजगार सृजन आदि पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- ग्रीन टग प्रोग्राम: इसके तहत 2040 तक 100 पर्यावरण अनुकूल टग्स तैनात करने का लक्ष्य रखा गया है।
- समुद्री सुरक्षा फ्रेमवर्क: यह महासागर (MAHASAGAR), एक्ट ईस्ट पॉलिसी, हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी आदि सहित रणनीतिक फ्रेमवर्क के माध्यम से मुक्त, खुली और समावेशी समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देता है।
 - महासागर (MAHASAGAR) से आशय है; म्यूच्यूअल एंड हॉलिस्टिक एडवांसमेंट फॉर सिक्योरिटी एंड ग्रोथ अक्रॉस रीजंस।

भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने प्रमुख रक्षा भागीदारी के लिए 10 वर्षीय फ्रेमवर्क पर हस्ताक्षर किए

यह फ्रेमवर्क मलेशिया के कुआलालंपुर में आयोजित 12वें आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक-प्लस (ADMM-Plus) के दौरान हस्ताक्षरित किया गया। इसका उद्देश्य रक्षा सहयोग को मजबूत बनाने के लिए एकीकृत विज्ञान और नीतिगत दिशा प्रदान करना है।

➤ इससे पहले, 2005-15 और 2015-25 की अवधि के लिए भी इसी तरह के फ्रेमवर्क पर हस्ताक्षर किए गए थे।

भारत-अमेरिका रक्षा सहयोग के बारे में

➤ संस्थागत और मूलभूत फ्रेमवर्क

⊕ शीर्ष वार्ता: 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता।

⊕ बुनियादी समझौते:

- ◆ लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA): इस पर 2016 में हस्ताक्षर किए गए थे। यह परस्पर लॉजिस्टिक्स सहायता को सक्षम बनाने पर केंद्रित है।
- ◆ कम्युनिकेशंस कंपैटिबिलिटी एंड सिन्क्रोसिटी एग्रीमेंट (COMCASA): इस पर 2018 में हस्ताक्षर किए गए थे। यह भारत को सुरक्षित संचार उपकरण प्राप्त करने की अनुमति देता है।
- ◆ औद्योगिक सुरक्षा समझौता (ISA): इस पर 2019 में हस्ताक्षर किए गए थे।
- ◆ बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट (BECA): इस पर 2020 में हस्ताक्षर किए गए थे। यह भू-स्थानिक जानकारी के आदान-प्रदान को सुगम बनाता है।

रणनीतिक और नीतिगत स्तंभ

➤ स्थिति: अमेरिका ने 2016 में भारत को प्रमुख रक्षा भागीदार (MDP) के रूप में नामित किया था।

➤ व्यापार सुविधा: अमेरिका ने 2018 में भारत को स्ट्रेटिजिक ट्रेड ऑथराइज़ेशन (STA) टियर-1 का दर्जा दिया था।

रक्षा उद्योग और प्रौद्योगिकी

➤ व्यापार की मात्रा: दोनों देशों के बीच रक्षा खरीद 20 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है।

⊕ भारत की रक्षा उत्पाद सूची में अमेरिकी मूल के महत्वपूर्ण रक्षा उत्पाद शामिल हैं, जैसे- C-130J, C-17 एवं P-8I विमान, और अपाचे, चिनूक व सीहॉक हेलीकॉप्टर।

➤ प्रौद्योगिकी को बढ़ावा: प्रौद्योगिकी और सह-उत्पादन में तेजी लाने के लिए रक्षा औद्योगिक सहयोग रोडमैप (2023) तैयार किया गया है।

➤ नवाचार इकोसिस्टम: स्टार्ट-अप और उद्योग को जोड़ने के लिए इंडस एक्स (डिफेंस एक्सेलरेशन इकोसिस्टम) की शुरुआत की गई है।

➤ नई पहलों की घोषणा: हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उद्योग की भागीदारी और स्वायत्त प्रणालियों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए स्वायत्त प्रणाली उद्योग गठबंधन (ASIA) पहल आरंभ की गई है।

परिचालन अंतर-संचालनीयता

➤ द्विपक्षीय अभ्यास: युद्ध अभ्यास (थल सेना), वज्र प्रहार (विशेष बल), कोप इंडिया (वायु सेना) आदि।

➤ बहुपक्षीय अभ्यास: मालाबार (भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया की नौसेनाओं का अभ्यास)।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने घोषणा की है कि अमेरिका परमाणु हथियार परीक्षण फिर से शुरू करेगा

संयुक्त राज्य अमेरिका 33 वर्षों के अंतराल के बाद परमाणु परीक्षण शुरू करने जा रहा है। आखिरी बार परीक्षण 1992 में किया गया था, जब शीत युद्ध के अंत की घोषणा की गई थी।

परमाणु हथियार नियंत्रण संधियां

संधि	वर्ष	पक्षकार/ हस्ताक्षरकर्ता देश	उद्देश्य और प्रमुख प्रावधान
परमाणु हथियार अप्रसार संधि (NPT)	1968 (1970 में लागू)	191 देश (भारत, इजरायल, पाकिस्तान और दक्षिण सूडान को छोड़कर)	परमाणु हथियारों और उनकी तकनीक के प्रसार को रोकना तथा परमाणु तकनीक के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग को बढ़ावा देना।
इंटरमीडिएट-रेंज न्यूक्लीयर फोर्सेज़ ट्रीटी (INF-Treaty)	1987	संयुक्त राज्य अमेरिका और तत्कालीन सोवियत संघ (USSR)	500-5,500 किमी रेंज वाली भूमि आधारित मिसाइलों को समाप्त किया गया।
सामरिक शस्त्र कटौती संधि (START I)	1991 (2009 में समाप्त)	संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ (बाद में रूस)	तैनात सामरिक परमाणु वारहेड्स को 6,000 और डिलीवरी व्हीकल्स को 1,600 तक सीमित किया गया।
व्यापक परमाणु-परीक्षण प्रतिबंध संधि (CTBT)	1996	187 देश हस्ताक्षरकर्ता तथा 178 देशों ने इसकी पुष्टि की। 9 देशों ने हस्ताक्षर नहीं किए, जिनमें भारत, भूटान, पाकिस्तान आदि शामिल हैं।	किसी भी उद्देश्य से सभी प्रकार के परमाणु विस्फोटों (परीक्षण सहित) पर पूर्ण प्रतिबंध लगाता है।
न्यू स्टार्ट/ START संधि	2010 से 2026 तक (2011 से प्रभावी)	संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस	तैनात सामरिक वारहेड्स को 1,550 और डिलीवरी सिस्टम को 700 तक सीमित करती है।
परमाणु हथियार निषेध संधि (TPNW)	2017 (2021 से प्रभावी)	95 हस्ताक्षरकर्ता और 74 पक्षकार; भारत, पाकिस्तान आदि ने हस्ताक्षर नहीं किए।	परमाणु हथियारों के विकास, परीक्षण, उन्हें अपने पास रखने और उपयोग पर प्रतिबंध लगाती है। यह कानूनी रूप से बाध्यकारी है।

सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती मनाई गई

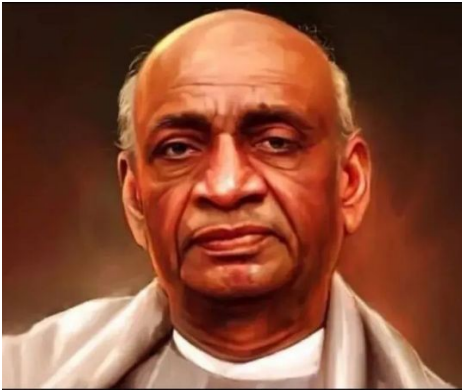
सरदार वल्लभभाई पटेल (1875-1950) के बारे में

- इनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात में एक किसान परिवार में हुआ था।
 - उनकी जयंती को अब राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि उन्होंने सैकड़ों रियासतों को एकजुट किया था और अखंड भारत की नींव रखी थी।
 - उन्हें भारत का लौह पुरुष भी कहा जाता है।
 - वे एक वकील थे, जो बाद में भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सार्वजनिक सेवा में शामिल हो गए।
- सरदार वल्लभभाई पटेल के प्रमुख योगदान
- स्वतंत्रता पूर्व:
- प्रारंभिक गांधीवादी आंदोलनों में नेतृत्व: 1918 में खेड़ा सत्याग्रह और अहमदाबाद मिल हड़ताल में भाग लेकर वे एक राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरे थे।
 - बारदोली सत्याग्रह (1928): उन्होंने भू-राजस्व में बढ़ोतरी के खिलाफ किसानों द्वारा एक अहिंसक विरोध का नेतृत्व किया था। इस आंदोलन में बारदोली की महिलाओं ने उन्हें “सरदार” की उपाधि से विभूषित किया था।
 - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में (कराची अधिवेशन, 1931): उन्होंने मौलिक अधिकारों और राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों पर प्रस्ताव पारित किये थे।

स्वतंत्रता के बाद:

- राजनीतिक एकीकरण के शिल्पकार: उन्होंने कूटनीति के माध्यम से 500 से अधिक रियासतों का तेजी से एकीकरण किया था। उदाहरण: जूनागढ़ (जनमत संग्रह), हैदराबाद (ऑपरेशन पोलो), आदि।
- आंतरिक स्थिरता: भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के रूप में उन्होंने विभाजन के दौरान प्रशासनिक व्यवस्था की स्थिरता को बनाए रखा था। साथ ही, इस दौरान उन्होंने सांप्रदायिक हिंसा और शरणार्थियों के आगमन के बीच कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- स्टील फ्रेम ऑफ इंडिया: उन्होंने अखिल भारतीय सेवाओं की स्थापना की थी, जिससे राष्ट्रीय एकता के लिए पेशेवर और तटस्थ प्रशासनिक संरचना तैयार हुई।

मूल्य: सत्यनिष्ठा, नेतृत्व, देशभक्ति, साहस, दृढ़ संकल्प, आदि।



प्रधान मंत्री ने आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूरे होने पर इसके योगदानों पर प्रकाश डाला

आर्य समाज के बारे में

- स्थापना: 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने बॉम्बे (वर्तमान मुंबई) में की थी।
 - धार्मिक सुधार:
 - स्वामी दयानंद सरस्वती ने मूर्तिपूजा और कर्मकांडीय पूजा की निंदा की, तथा सभी मनुष्यों के प्रति सम्मान एवं श्रद्धा का उपदेश दिया।
 - उन्होंने वेदों को अचूक प्रमाण के रूप में स्वीकार किया था। उन्होंने ‘वेदों की ओर लौटो’ का आह्वान किया था।
 - सामाजिक सुधार:
 - वंशानुगत जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता (छुआछूत) का विरोध किया।
 - सभी जातियों के लिए वैदिक शिक्षा का समर्थन किया था। दयानंद सरस्वती ने बाल विवाह और विधवा महिलाओं के बहिष्कृत स्थिति में रहने का विरोध किया था। इसके अलावा, उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए अभियान भी चलाया था।
 - शैक्षणिक सुधार: उदाहरण के लिए- 1886 में दयानंद एंग्लो वैदिक (DAV) ट्रस्ट और प्रबंधन की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य वैज्ञानिक और आधुनिक शिक्षा प्रदान करना था।
 - स्वतंत्रता आंदोलन: प्रमुख सदस्यों में लाला लाजपत राय, भगत सिंह, राम प्रसाद बिसमिल, मदन लाल दींगरा, स्वामी श्रद्धानंद, सचिंद्र नाथ सान्याल जैसे स्वतंत्रता सेनानी शामिल थे।
- आर्य समाज के सिद्धांतों की समकालीन प्रासंगिकता
- सामाजिक समानता: जातिवाद और अस्पृश्यता के विरोध ने भारत के संविधान में निहित समानता एवं न्याय के मूल्यों को सशक्त किया है।
 - लैंगिक सशक्तीकरण: महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों का समर्थन बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, नारी शक्ति वंदन अधिनियम जैसी योजनाओं के अनुरूप है।
 - शिक्षा और तर्कवाद: DAV संस्थाएं वैज्ञानिक और नैतिक शिक्षा की अपनी विरासत को जारी रखे हुए हैं। यह संविधान के अनुच्छेद 51A(h) के तहत वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समर्थन करता है।
 - अन्य: कर्मकांडों की बजाय नैतिक जीवनयापन पर जोर; धर्मों के बीच सद्भाव पर बल; प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने का समर्थन आदि।



अन्य सुर्खियां



एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (APEC)

वर्ष 2025 का एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (APEC) शिखर सम्मेलन दक्षिण कोरिया के ग्योंगजू शहर में आयोजित किया गया।

APEC के बारे में:

- स्थापना: APEC की स्थापना 1989 में की गई थी।
- सचिवालय: सिंगापुर में स्थित है।
- सदस्य देश: APEC के 21 सदस्य देश हैं-
 - ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, चिली, चीन, इंडोनेशिया, जापान, दक्षिण कोरिया, मलेशिया, मैक्सिको, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि।
- भारत: भारत APEC का सदस्य नहीं है, लेकिन इसे “पर्यवेक्षक (Observer)” का दर्जा प्राप्त है।
- उद्देश्य: APEC का उद्देश्य एशिया-प्रशांत क्षेत्र में एक सक्रिय और सामंजस्यपूर्ण समुदाय का निर्माण करना है, जो मुक्त और खुले व्यापार एवं निवेश का समर्थन करे तथा आर्थिक एकीकरण व सहयोग को बढ़ावा दे।



बचत दर

EAC-PM (प्रधान मंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद) के अध्यक्ष का कहना है कि 7% की संवृद्धि दर प्राप्त करने के लिए भारत की निवेश दर को 34-35% तक बढ़ाने की आवश्यकता है। ऐसा इस कारण क्योंकि संवृद्धि दर का वित्त-पोषण मुख्यतः बचत और विदेशी निवेश के माध्यम से होता है।

बचत दर के बारे में

- यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वह राशि है, जो परिवारों, व्यवसायों और सरकार द्वारा बचत की जाती है।
- इसकी गणना प्रयोज्य आय (disposable income) और अंतिम उपभोग व्यय के बीच अंतर के रूप में की जाती है।
- 2024 में भारत की बचत दर 30.2% (GDP के प्रतिशत के रूप में) रही है।





अभ्यास त्रिशूल

भारत ने पाकिस्तान से लगी पश्चिमी सीमा पर गुजरात और राजस्थान में एक बड़ा लि-सेवा अभ्यास 'अभ्यास त्रिशूल' शुरू किया।

अभ्यास त्रिशूल के बारे में

- उद्देश्य: भारतीय थल सेना, नौसेना और वायु सेना की संयुक्त परिचालन क्षमता एवं रणनीतिक तैयारियों को समझना।
- यह अभ्यास एक ऐसा मंच प्रदान करेगा, जिससे यह प्रदर्शित किया जा सकेगा कि स्वदेशी रक्षा प्रणालियों को भारत के परिचालन ढांचे में कैसे एकीकृत किया जा रहा है।



आइबेरियन लिंक्स

स्पेन में विश्व का पहला सफेद आइबेरियन लिंक्स देखा गया।

आइबेरियन लिंक्स के बारे में

- IUCN स्थिति: वल्नरेबल।
- IUCN प्रजातियों का ग्रीन स्टेटस: लार्जली डेप्लेटेड।
- CITES: परिशिष्ट-I में सूचीबद्ध।
- प्राकृतिक पर्यावास: आश्रय के लिए घनी झाड़ियां और शिकार के लिए खुले चारागाह।
 - खरगोशों की अधिकता आइबेरियन लिंक्स के पर्यावास का आवश्यक घटक है।
- व्यवहार: मुख्य रूप से संध्याचर (आमतौर पर दिन में सोते हैं) और रात्रिचर होते हैं। हालांकि, दिन के समय भी सक्रिय हो सकते हैं।
- प्रमुख खतरे: खरगोशों की आबादी में गिरावट, पर्यावास क्षति और विखंडन, रोग का प्रसार, कम आनुवंशिक विविधता, अवैध शिकार आदि।



क्रिएटिव सिटी ऑफ़ गैस्ट्रोनोंमी

यूनेस्को महासभा के 43वें सत्र ने लखनऊ को अपने यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (UCCN) के हिस्से के रूप में 'क्रिएटिव सिटी ऑफ़ गैस्ट्रोनोंमी (पाककला)' नामित किया है।

- इस श्रेणी में हैदराबाद के बाद यह दूसरा भारतीय शहर है।
- अन्य भारतीय शहर जो इस नेटवर्क का हिस्सा हैं, उनमें शामिल हैं: ग्वालियर (संगीत), जयपुर (शिल्प और लोक कला), चेन्नई (संगीत), आदि।

UCCN के बारे में

- उत्पत्ति: इसकी स्थापना 2004 में की गई थी, ताकि उन शहरों के साथ और उनके बीच सहयोग को मजबूत किया जा सके जिन्होंने सतत विकास के लिए रचनात्मकता को एक रणनीतिक कारक के रूप में मान्यता दी है।
- शामिल 7 रचनात्मक क्षेत्र: शिल्प व लोक कला, डिजाइन, फिल्म, पाककला, साहित्य, संगीत और मीडिया कला।



बाल्टिक सागर

पोलैंड ने बाल्टिक सागर के ऊपर से उड़ान भरते एक और रूसी विमान को इंटरसेप्ट किया।

बाल्टिक सागर के बारे में

- यह उत्तरी यूरोप में अवस्थित है।
- सीमावर्ती देश: स्वीडन, पोलैंड, लिथुआनिया, लातविया, फिनलैंड, एस्टोनिया, जर्मनी, डेनमार्क और रूस।
- कील नहर, उत्तरी सागर को बाल्टिक सागर से जोड़ती है।
- यह डेनिश जलडमरूमध्य के माध्यम से अटलांटिक महासागर से जुड़ा हुआ है।
- इसे दुनिया का सबसे बड़ा लवणीय अंतर्देशीय जल निकाय माना जाता है।
 - बाल्टिक सागर के उथलेपन और आस-पास के स्थलीय भाग से ताजे जल के प्रवाह के कारण इसके जल की लवणता का स्तर विश्व के अन्य महासागरों की तुलना में कम है।



आल्फवेन तरंगें

एक हालिया अध्ययन में विशिष्ट लाल और नीले डॉप्लर शिफ्ट्स का खुलासा हुआ। इसने सूर्य के कोरोना में आल्फवेन तरंगों की उपस्थिति की पुष्टि की।

आल्फवेन तरंगों के बारे में

- ये प्लाज्मा में उत्पन्न होने वाली चुंबकीय तरंगें होती हैं, जो सूर्य की चुंबकीय रेखाओं के साथ-साथ चलती हैं। ये तरंगें प्लाज्मा को एक तरफ से दोलन (oscillation) कराती हैं।
- ये तरंगें प्लाज्मा (या विद्युत चालक द्रव) की स्थिति में उत्पन्न होती हैं। ये तरंगें तब बनती हैं, जब प्लाज्मा के भीतर मौजूद चुंबकीय क्षेत्र और विद्युत धाराएं परस्पर क्रिया करती हैं। इस क्रिया के कारण प्लाज्मा के आयन (ions) दोलन करते हैं, जिससे आल्फवेन तरंगों का निर्माण होता है।
- ऐसा माना जाता है कि ये तरंगें सूर्य की सतह से कोरोना तक ऊर्जा का वहन करती हैं, जो इसके अत्यधिक उच्च तापमान में योगदान करती है।
- महत्व: कोरोनल हीटिंग, सौर पवन त्वरण, बेहतर अंतरिक्ष मौसम पूर्वानुमान आदि।



अहमदाबाद



भोपाल



चंडीगढ़



दिल्ली



जयपुर



जोधपुर



गुवाहाटी



हैदराबाद



लखनऊ



प्रयागराज



पुणे



राँची



सीकर